रोपण

2 वर्ष की पौध रोपण हेतु उपयुक्त होती है तथा वर्शाकाल के आरम्भ में रोपण करने पर अच्छा परिणाम प्राप्त होता है।

समयबद्ध कार्यक्रम

क्र.स.	कार्य	वर्ष	माह
	वर्धी प्रवर्धन		
1	स्वस्थ पौधों का चयन	–	कभी भी
2	स्वस्थ पौधों से कटिंग प्राप्त करना/लगाना	प्रथम वर्ष	जुलाई प्रथम पक्ष
3	रूटेड कटिंग का रूट–ट्रेनरों/पॉलीथीन में प्रत्यारोण	द्वितीय वर्ष	मार्च प्रथम पक्ष
4	पौध का रखरखाव	द्वितीय वर्ष	–
5	रोपण	तृतीय वर्ष	जुलाई
	बीज द्वारा पौध तैयार करना		
1	स्वस्थ व रोगमुक्त पौधों से बीज एकत्रीकरण	प्रथम वर्ष	नवम्बर द्वितीय पक्ष
2	शेडहाउस में बीज बुआई	द्वितीय वर्ष	फरवरी द्वितीय पक्ष
3	अंकुरित पौधों का प्रत्यारोपण	द्वितीय वर्ष	जुलाई–अगस्त
4	पौध का रखरखाव	द्वितीय वर्ष	–
5	रोपण कार्य	तृतीय वर्ष	जुलाई

विस्तृत जानकारी हेतु सम्पर्क करें:

1– मुख्य वन संरक्षक, जैव विविधता संरक्षण, विकास एवं अनुसंधान
मो0– 9412076135, 05946–234047
2– वन संरक्षक , अनुसंधान वृत्त हल्द्वानी
मो0 9458192126, 0596–235136
3– वन वर्धनिक, पर्वतीय, उत्तराखण्ड, नैनीताल
मो0 09458192184, 05942–236270

अनुसंधान पत्रक 5/2013-14

रूईस
(Cotoneaster bacillaris)

पौध उत्पादन प्राविधि

वन वर्धनिक, उत्तराखण्ड, नैनीताल
उत्तराखण्ड वानिकी अनुसंधान संस्थान, हल्द्वानी
वन विभाग, उत्तराखण्ड

रूईस
(Cotoneaster bacillaris)

परिचय

रूईस रोजेसी कुल की पर्णपाती झाड़ी प्रजाति है जिसकी ऊँचाई लगभग 5 मीटर तथा गोलाई 0.23 मी0 तक होती है। यह सामान्यतः हिमालयी क्षेत्रों में 1800 से 2600 मी0 ऊँचाई तक जंगल के खाली स्थानों व पुराने चारागाहों में पाया जाता है। छाल खुरदरी लाल–भूरी, पुष्प सफेद एवं परिपक्व फल काले रंग के होते हैं। पुष्पण अप्रैल से जून तक होता है तथा फल नवम्बर–दिसम्बर में परिपक्व होते हैं। फल से रोज टैन डाई बनायी जाती है तथा शाखाओं से छड़ी व कृषि यंत्र बनाये जाते हैं। यह कीटों को अपनी ओर आकर्षित करता है तथा इसमें वायु प्रदूषण के प्रति प्रतिरोधक क्षमता होती है।

प्रवर्धन प्राविधि

रूईस का प्रवर्धन बीज तथा कटिंग द्वारा सरलता से किया जा सकता है।

वर्धी प्रवर्धन (कटिंग द्वारा पौध तैयार करना)

- दो वर्ष पुरानी शाखा का चयन करें।
- माह जुलाई प्रथम पक्ष में शाखाओं के अग्र भाग से 10 सेमी0 की कटिंग तैयार करें।
- कटिंग को रूटैक्स से उपचारित कर मिस्ट चैम्बर में बालू में रोपित करें।
- 3 माह के पश्चात कटिंग में जड़ प्रस्फुटन प्रारम्भ हो जाता है जो आगामी कई माह तक चलता रहता है एवं फरवरी तक 65 से 70 प्रतिशत रूटिंग प्राप्त हो जाती है।
- जड़ युक्त पौधों का प्रत्यारोपण माह मार्च के प्रारम्भ में 300 सी0सी0 के रुट–ट्रेनर या 9"x 6" के पौलीबैग में करना चाहिए।
- प्रत्यारोपण के लगभग 15 माह बाद अगले वर्षाकाल में पौधे रोपण हेतु तैयार हो जाते हैं।

बीज द्वारा पौध तैयार करना

उच्च गुणवत्ता के बीज को प्राप्त करने के लिए सर्वप्रथम स्वस्थ व रोग मुक्त पौधों का चयन किया जाता है तथा इन्ही पौधों से बीज एकत्र करना चाहिए। माह नवम्बर के द्वितीय पक्ष में परिपक्व बीज को एकत्र कर शीघ्र ही इसके पल्प को हटाकर बीज साफ व भंडारित करना चाहिए। माह फरवरी के द्वितीय पक्ष में बीज बोना चाहिए तथा बोने से पहले सामान्य ठण्डे पानी में 12 घण्टे भिगाते हैं एवं इसके पश्चात शुद्ध सलफ्यूरिक अम्ल में बीज को डालकर 15 सेकण्ड तक उपचारित करते हैं। उपचारित बीज की बुआई शेड हाउस में जर्मिनेशन ट्रे में ह्यूमस+मिट्टी (1:1) में करते हैं। बुआई का कार्य लाइन में करते हैं। लगभग 25 दिनों में अंकुरण प्रारम्भ हो जाता है तथा बुआई के 120 दिनों के अन्दर लगभग 55 प्रतिशत अंकुरण प्राप्त होता है।

पौध प्रत्यारोपण

अंकुरित पौध का प्रत्यारोपण जुलाई–अगस्त में किया जाना चाहिए जब उसमें कम से कम 3–4 पत्तियॉ आ जाय। प्रत्यारोपण हेतु पौधों को सावधानीपूर्वक जर्मीनेशन ट्रे या अंकुरण क्यारी से निकालना चाहिए तथा पौधे को कालर के बजाय पत्ते से पकड़ना चाहिए। प्रत्यारोपण 300सी0सी0 के रूट–ट्रेनर या 9"x 6" के पॉलीबैग में शेड हाउस में करने पर अच्छा परिणाम मिलता है। पाटिंग मीडियम मिट्टी+वर्मीकम्पोस्ट (2:1) उपयुक्त पाया गया। अगले वर्श फरवरी–मार्च में पौधों को खुले स्थान में रखा जा सकता है तथा आवश्यकतानुसार नियमित रूप से सिंचाई करनी चाहिए।